अतीत की ओर...

प्रमिला

माँ से मातृभाषा तक...

वर्ष : 02 , अंक : 08, जून – जुलाई 2024

केहु लेवे ना हाल हमरा ठौर – ठिकाना के
जबसे निकलल बानी गिरफ्त से ज़माना के...

- सोनु किशोर

मूल्य : 20 रुपए | पृष्ठ : 4

ई – पत्रिका उपलब्ध है : www.rachnakosh.in

रितेश आदर्श

बिहार से ही है बनारसी पान की शान

बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है। यहाँ की सबसे बड़ी पूंजी जमीन और खेती रही है। शायद यही कारण है कि चंपारण सत्याग्रह से महात्मा होने की नींव इस बिहार में पड़ी। असल मायने में गांधी को महात्मा बिहार ने बनाया और उसके केंद्र में हमारी उर्वर मिट्टी थी जो नीला सोना उगलती थी। खेती हम करते रहे, मौज अंग्रेजों की रही। आजाद भारत में भी बिहार की कृषि प्रधान व्यवस्था ने देश की अर्थव्यवस्था में जान फूंकी है। इसके बावजूद आंकड़ों में गेंहू से आपको पंजाब याद आता होगा, धान माने उत्तर प्रदेश, जूट मतलब बंगाल, कपास और प्याज मतलब नासिक, कॉफी सुनकर दक्षिण भारत याद आता होगा। इसी तरीके से मोटे मोटे तौर पर कृषि आधारित पहचान राष्ट्रीय स्तर पर महसूस की जाती है। बिहार के संदर्भ में कल्पना शक्ति इस कदर लहूलुहान है कि बिहार शब्द हमें दो बातें याद दिलाता है - ट्रेन में लदकर बिहार से भागते लोग, और बिहार राज्य का स्विमिंग पूल होना यानी बाढ़ प्रभावित एक बीमार राज्य। थोड़ी बहुत गुंजाइश अगर बच गई तो बिहार की मिठास 'लीची' कमोबेश लोग याद कर जाते हैं। जी आई टैग एक ऐसी व्यवस्था है जो क्षेत्र विशेष की उपज और किसानों को बढ़ावा देने की केंद्र सरकार की एक सकारात्मक पहल है। लीची ने जी आई टैग का यह सम्मान पाया है। लीची से पहचान मुजफ्फरपुर की है, पर लीची को बिहार की पहचान बनते देर नहीं लगी। भारत की एक बड़ी समस्या है, वह उत्तर प्रदेश, बिहार, ओडिशा, झारखंड, छत्तीसगढ़, उत्तराखंड को अक्सर एक संयुक राज्य ऑफ मजदूर संगठन समझ लेता है। यह दंश बिहार का कृषि उद्योग भी झेलता है। 38 जिलों में बंटे हुए इस राज्य को देश ने कभी भी टाटा, बोकारो, रांची या भोपाल, जबलपुर, इंदौर या कानपुर, लखनऊ, बनारस की तरह समझना ही नहीं चाहा। बिहार कभी भागलपुर, दरभंगा, गया, पटना, मुजफ्फरपुर नहीं हो पाया। बिहार इसी बात का संतोष मानता है कि देश के हर कोने का बच्चा जब राजधानी याद करता है तो उसे पटना भी शायद याद हो जाता है। इसी बायस में बिहार की वैविध्य कृषि संपदा सही ढंग से वह सम्मान नहीं पा सकी है। मेरा ख्याल है कि देश का हर कोना इस बात में यकीन करता है कि बनारस जीते जी एक बार जाना चाहिए। इस देश के हर कोने में बनारसी पान के मुरीद भी हैं। बनारस बाबा विश्वनाथ, अपनी साड़ी और अपने पान तीनों के लिए सराहा जाता है। बनारस में अच्छा खासा वक्त बिताने के बाद मैंने कुछ पड़ताल किया।

बनारसी पान

आखिर बनारसी पान कितना बनारसी है ? जवाब मिला कि पान का बना हुआ रस बिहार की मिट्टी, पानी और धूप से सिंचित हुआ है। वह रस जो बनारस से पूरी दुनिया तक पहुंचा है, उसकी मजबूती बिहार से है। काशी जनपद और मगध साम्राज्य तो ऐतिहासिक रूप से संयुक्त रहे हैं। आधुनिक भारत में बनारस और मगध यानी दक्षिण बिहार का गया और अन्य कई जिले इस अटूट रिश्ते की डॉक्यूमेंट्री हैं। बनारसी पान की उपज और आपूर्ति बिहार का मगही बेल्ट ही करता है। इस लेख के माध्यम से मैं आपको उत्तर बिहार के मुजफ्फरपुर में उपज रहे लीची से दूर आपको दक्षिण बिहार के पान तक ले गया। मैं दुबारा आपको सचेत करता हूं, दक्षिण बिहार से मेरा मतलब मगही क्षेत्र से है, मगही में भी मुख्य तौर पर गया जिला की बात कर रहा हूं। बिहार का भूगोल समझना

पानीफल

शायद आपको कभी जरूरी न लगा हो, और कमर भर डूबे राज्य की ही परिकल्पना रही हो, तो चलिए आपकी उसी परिकल्पना से उपजे दो और उत्पाद मखाना और सिंघाड़ा(पानीफल) की भी आपको याद दिला दूं।

बिहार में दोनों का उत्पादन भी बड़े स्तर पर होता है। मिथिला क्षेत्र यानी दरभंगा और आसपास के जिले अपनी मखाना की उत्कृष्ट खेती के लिए जी आई टैग पा चुके हैं। पानीफल को लेकर मेरी जानकारी उतनी पक्की नहीं है लेकिन यह फल भी बिहार के विशिष्ट भौगोलिक परिस्थितियों की वजह से प्रचुर मात्रा में उपजता है। अगर मैं अपने जिले सारण की बात करूं तो हम किसी विशिष्ट फसल में उलझे नहीं हैं। हम कमोबेश हर चीज उगा लेते हैं। बिहार का उत्तर पश्चिमी जिला होना और तीन तरफ से नदियों से घिरा होना हमारी जमीन को नेक्स्ट लेवल की उर्वरता देता है। हमारी ज्योग्राफी ने हमें टैग होने जितना विशिष्ट नही बनाया है, पर जरूरत की ढेर सारी चीजें उपजाने का सामर्थ्य दे दिया है। अपनी तमाम चुनौतियों और सुविधाओं के बीच जब मैं अपने जिले से ऊपर उठ कर राज्य को देखता हूं तो चंपारण के मर्चा चावल, जैसे और कई अन्य उपलब्धियों को समझने की कोशिश करता हूं।

मर्चा चावल

अंत में इसी निष्कर्ष पर पहुंचता हूं कि बिहार बाढ़ और भ्रष्ट नेताओं से जीत भी जाए पर बायस से जीत पाना बड़ा मुश्किल होगा। शायद यही वजह की लगभग साढ़े छः सौ जी आई टैग देश भर में सरकार द्वारा चिन्हित किए गए, पर बिहार की ज्योग्राफी शायद किसी के पल्ले नहीं पड़ी या शायद ज्योग्राफी से पल्ला ही झाड़ लिया गया, कहना मुश्किल है, पर बिहार मजबूत है, हमें अब फर्क नही पड़ता। आप अपने बायस के हवाले रहिए, हम ऐसे ही सेलफ्लेस लव करते रहेंगे, और कभी बनारसी पान बनेंगे तो किसी दूर देश में फोर्क और नाइफ से कटने वाली लीची बनेंगे। इस देश में जहां 28 राज्य एक दूसरे से झगड़ते हैं, इंडिया भारत एक नहीं हो पाते हैं, वहां 38 जिलों के राज्य को आप संयुक्त देख रहे हैं, आपको शुभकामनाएं। हम अपनी विविधता का सम्मान खुद कर लेंगे।

अतीत की ओर...

इतिहास के पन्नों में...

1879: भारत में पोस्टकार्ड की शुरुआत।

2006: शतरंज खिलाड़ी परिमार्जन नेगी सबसे कम उम्र के दूसरे ग्रैंडमास्टर बने।

वोकल फॉर लोकल से कृषि अर्थव्यवस्था में आएगी जान

प्रेम शंकर

"जीआई टैग" (भौगोलिक संकेत) नाम ही किसी उत्पाद के किसी विशिष्ट भौगोलिक स्थान से उत्पन्न होने को दर्शाता है, जो आमतौर पर ग्रामीण, सीमांत और स्वदेशी समुदायों द्वारा उत्पादित मूल स्थान के खुशबू, स्वाद व अनोखे गुणों को समेटे हुए पिढ़ियो से राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित है। GI टैग उपयोगकर्ता समूह के अलावा दूसरों को GI टैग प्राप्त उत्पादों का नाम इस्तेमाल करने से रोकता है। GI टैग मिलने से उत्पाद के प्रतिष्ठा व विक्रय में वृद्धि होती है साथ ही उत्पादन करने वाले खास समूह व जगह के पहचान में भी वृद्धि होती है। GI Tag के सुरक्षा का अधिकार सरकार के अलावा World Intellectual Property Organisation (WIPO) और World Trade Organization (WTO) के पास है। जो कि किसी उत्पाद को राज्य व समूह के अनुशंसा से प्राप्त होता है।

वही इन सबके अलावा बिहार राज्य कृषि विभाग व बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर मिलकर कुछ और बिहारी उत्पादों को जी आई टैग दिलाने की कोशिश कर रहे हैं। जिनमें प्रमुख हैं--- लिट्टी चोखा, सोनाचूर चावल, गुलशन टमाटर, गया का तिलकुट, वैशाली का चिनिया केला, भोजपुर का खुरमा, सीतामढ़ी की बालूशाही, इत्यादि। मूल रूप से केवल बिहार में उत्पादित उत्पादों की संख्या इतनी अधिक है पर जी आई टैग मिलने की रफ्तार बहुत ही कम। इसके लिए बिहार सरकार को अलग से एक विभाग बनाकर ज्यादा से ज्यादा संख्या में उत्पादों को GI टैग दिलाने की कोशिश करनी चाहिए, जिससे कि उत्पाद व उनके नाम चोरी होने से बचे रहे और वे उत्पाद अपनी मूल गुणों और स्वाद के साथ अपनी पहचान बना सके।

अगर हम बात करें हमारे आसपास के उत्पादों की जिन्हें GI टैग मिलनी चाहिए तो उनमें मुख्यतः होंगे :-

1. लाल धान/साठी चावल
2. पटुआ
3. पानी फल
4 मिट्टी से बने बर्तन
5. बांस का दउरा व सूप
6. बांस से बने हस्तकला के वस्तु
7. बहुतेरों अद्भुत स्वाद वाले पेड़े
8 . (ताजपुर) मांझी का एटम बम मिठाई

बांस का दउरा व सूप

बांस से बने हस्तकला के वस्तु

(ताजपुर) मांझी का एटम बम मिठाई

सरकार के कोशिशों के अलावा एक समाज के तौर पर हमें भी कोशिश करनी चाहिए कि हम ऐसे मूल उत्पादों को बढ़ावा दें जिनका उत्पादन आधार आज से कुछ वर्षों पहले हम छोड़ चुके हैं जैसे - पटुआ (जो की रस्सी बनाने के काम आता है), मरूआ, टौनी, साठी, पानी फल, इत्यादि। ऐसे बहुतेरों उत्पाद हैं जिनमें लवण और पोषणों का भंडार है। अगर ऐसे उत्पादों को GI टैग मिलता है तो इनके उत्पादन, बिक्री इत्यादि में वृद्धि होगी। उत्पादन आधार और मूल्यवृद्धि, विक्रय, भंडारण इत्यादि के बढ़ने से न सिर्फ पहचान मिलेगी बल्कि खस्ताहाल कृषि अर्थव्यवस्था में एक नई जान आ सकती है।

बिहार की डूबती अर्थव्यवस्था व पहाड़ की तरह खड़े बेरोजगारी के समस्या के लिए भी GI टैग एक दीपक एक लौ का काम कर सकती है। बिहार जो की मुख्यतः कृषि उत्पादन व कृषि अर्थव्यवस्था पर टिका हुआ राज्य है, GI टैग मिलने से विश्व स्तरीय कृषि निर्यात में वृद्धि हो सकती है। 'मखाना' और 'शाही लीची' हमारे पास उदाहरण है कि कैसे कृषि उत्पादन व GI टैग न सिर्फ राज्य, गांव, व समाज के अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में सक्षम है बल्कि एंटरप्रेन्योरशिप (Entrepreneurship) का एक नया अध्याय भी लिख सकता है।

शायद खुश हो जाते हम

काश होती जीवन फिल्मो जैसी
लेते जन्म दुबारा हम
मेरा बचपन फिर से आता
शायद खुश हो जाते हम
खुशियों की क्या बात करूँ मैं
अभी जो बीता बचपन था मेरा
स्कूल से आना खेलने जाना
वो ख़ुशी थी
सबके आँखों का तारा होना
सबका राज दुलारा होना
वो ख़ुशी थी
ख़ुशी हुई थी जब कुछ न
अपना होके सब कुछ अपना था
वो हसीं थी वो ख़ुशी थी
शायद बचपन बिता खुशिया छुटी
अब सब कुछ अपना
पर अब वो बचपन नहीं
काश समय अब रुक जाता
साथ समय के चलते हम
मेरा बचपन फिर से आता
शायद खुश हो जाते हम
मेरा बचपन फिर से आता
शायद खुश हो जाते हम

~ अनुराधा तिवारी

रेखाचित्र : भाग - 6

आर्टिस्ट का नाम :
पंकज कुमार (प्रभुनाथ नगर)

अतीत की ओर...

इतिहास के पन्नों में...

1946: राजशाही खत्म होने के बाद इटली गणतांत्रिक राष्ट्र बना।

2008: केन्द्र सरकार ने तीनों सेनाओं के लिए 'एकीकृत स्पेस सेल' की घोषणा की।

बिहार का लिट्टी-चोखा वैश्विक पहचान के लिए तैयार

आकांक्षा राज

भारत में प्राप्त जीआई टैग (GI tag) की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, जिससे ये प्रतीत होता है कि भारतीय संस्कृति, विरासत और परंपराओं के संरक्षण के लिए GI tag (जीआई टैग) का कितना महत्व है। GI tag के अप्रूवल के माध्यम से, स्थानीय विकास को समर्थन मिलता है और देश के अन्य क्षेत्रों में आर्थिक विकास को सुनिश्चित करने में मदद मिलती है।

बिहार में अब तक कुल 16 उत्पादों को जीआई टैग मिल चुका है। इनमें हस्त कला से संबंधित चीजें भी शामिल हैं और कृषि उत्पाद भी। बिहार की विश्व प्रसिद्ध मिठाई को भी जीआई टैग मिल चुका है।

मधुबनी चित्रकला (मिथिला)

1. शाही लीची (मुजफ्फरपुर)
2. जर्दालु आम (भागलपुर)
3. सिलाव खाजा (नालंदा)
4. मगही पान (गया और नालंदा)
5. कतरनी चावल (भागलपुर, बांका)
6. मधुबनी चित्रकला (मिथिला)
7. सुजनी कढ़ाई (मुजफ्फरपुर)
8. मंजूषा आर्ट
9. सुजनी कढ़ाई लोगो
10. भागलपुरी सिल्क (भागलपुर)
11. एप्लिक (खट्वा) (पश्चिमी चम्पारण)

भागलपुरी सिल्क (भागलपुर)

सिक्की घास शिल्प (मिथिला)

12. सिक्की घास शिल्प (मिथिला)
13. सिक्की घास लोगो
14. एप्लिक कढ़ाई लोगो
15. मिथिला मखाना
16. मर्चा धान (पश्चिमी चम्पारण)

बिहार में एक बार फिर जीआई टैग चर्चाओं में शामिल हो गया है क्योंकि लिट्टी चोखा समेत बिहार के छह लजीज पकवानों को जल्द ही यह टैग मिलने वाला है। इसकी तैयारी जोर शोर से चल रही है, जो लगभग अंतिम चरण में है। हालांकि, सवाल यह है कि आखिर यह जीआई टैग होता क्या है और किस प्रकार दिया जाता है। साथ ही एक बार दिए जाने के बाद यह कितने सालों तक वैध होता है। GI का पूरा मतलब Geographical Indication यानी भौगोलिक संकेत होता है। जीआई टैग (GI Tag) एक प्रकार का प्रतीक है, जो मुख्य रूप से किसी उत्पाद को उसके मूल क्षेत्र से जोड़ने के लिए दिया जाता है। जीआई टैग किसी उत्पाद की विशेषता बताता है। आसान शब्दों में कहें तो जीआई टैग बताता है कि विशेष उत्पाद किस जगह से ताल्लुक रखता है या इसे कहां बनाया जाता है। यह उन उत्पादों को ही दिया जाता है, जो अपने क्षेत्र की विशेषता रखते हों, या सिर्फ उसी क्षेत्र में पैदा होते हों या बनाए जाते हों। भारत में इसके इतिहास की बात करें, तो इसका इतिहास साल 1999 का है। इस वर्ष Registration and Protection Act के तहत जीआई टैग गुड्स की शुरुआत हुई थी। इसके तहत भारत में किसी भी इलाके की वस्तु को उसकी विशेषता और भौगोलिक स्थिति को देखते हुए उस स्थान का जीआई टैग दिया जाता है, जिससे वो राज्य या जिला संबंधित वस्तु का कानूनी अधिकारी हो जाता है। इससे उस वस्तु को कोई भी दूसरा राज्य या जिला अपने यहां का बताकर नहीं बेच सकता है। इसकी वैधता 10 वर्ष तक होती है। अगर किसी राज्य को इसकी अवधि बढ़ानी हो तो वो फिर से आवेदन कर सकता है।

इसके अलावा बिहार कृषि विश्वविद्यालय कई अन्य उत्पादों के लिए भी जीआई टैग हासिल करने की दिशा में काम कर रहा है, जिसमें लिट्टी-चोखा के साथ-साथ सिंघाड़ा, सोनाचूर चावल, गुलशन टमाटर और दूधिया मालदा शामिल हैं। बिहार और लिट्टी-चोखा एक दूसरे के पूरक है। लिट्टी-चोखा का स्वाद सिर्फ बिहार में ही नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध है। इसीलिए हमारे बिहार की आन बान और शान लिट्टी-चोखा को भौगोलिक संकेत यानी G.I टैग तो मिलना ही चाहिए। लिट्टी-चोखा का स्वाद जितना गहरा है, उससे भी गहरा है इसका इतिहास। ये बिहार का एक पारंपरिक व्यंजन है जो मगध काल से चला आ रहा है। कहा जाता है कि चंद्रगुप्त मौर्य के सैनिक युद्ध में लिट्टी-चोखा अपने साथ ले जाते थे क्योंकि ये आसानी से खराब नहीं होता था और खाने में हल्का होता था। 18वीं सदी में यह लंबी यात्राओं पर जाने वाले यात्रियों का मुख्य भोजन था। शुरुआत में बिहार के किसान लिट्टी-चोखा खाते थे क्योंकि यह जल्दी बन जाता था और पेट के लिए फायदेमंद होता था। मगध से शुरू हुआ लिट्टी-चोखा का दिलचस्प सफर आज दुनिया भर में पहुंच चुका है और लोग आज बिहार को लिट्टी-चोखा के लिए विशेष रूप से जानते है।

भोजपुरी विशेष

'गुंजन' के प्रेम गीत : 'सनेहिया'

छछनल नदिया के धार हs सनेहिया
झूमतs बसंती बयार हs सनेहिया।

माने ना ऊँच - नीच धन के आ तन के
अँकुरे करेजवे में लवे - लवे पनके।
मनई के मन के सिंगार हs सनेहिया।।
झूमतs बसंती बयार हs सनेहिया....

राधा के प्रीत गीत मीरा के मन के
कान्हा के मीत रीत भगति - भजन के।
कुहकत करेज के करार हs सनेहिया।।
झूमतs बसंती बयार ह...

माई के ममता सुहागिन के थाती
पीर परदेसी के बिरहिन के पाती।
सावन के रिमझिम फुहार हs सनेहिया।।
झूमतs बसंती...

प्रेम पद्मावत के कबीरा के साखी
शबरी के जूठ बेरि द्रोपदी के राखी।
गीत गोविन्दम् के सार हs सनेहिया।।
झूमतs बसंती बयार हs सनेहिया...

- डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन'
(बेतिया, बिहार)

साहित्य मासिक

घनश्याम

श्याम से सावन तक...

वर्ष : 02 , अंक : 08 , जून – जुलाई 2024

मूल्य : 20 रुपए

ई – पत्रिका उपलब्ध है : www.rachnakosh.in

पटरियों जैसी हो गई है ज़िंदगी,
आते तो बहुत लोग हैं, रुकता कोई नहीं...
- अलबेला

"एक बेरुखी भरी शाम"

वो प्यारी सी साँझ और नदी का तीर,
वो कार्तिक का मास,
मैं बैठा किनारे बनकर फकीर,
पिघल रहा पश्चिम में सूरज खुद को स्थिर
बहती नदी में निहार रहा था।
पूरब दिशा में बकुलों की झुंड, नदी से टूटे कछार में,
अपनी चोंच में छोटी मछलियों को अपना शिकार बना रहे थे,
अपने साथियों के साथ चर रहे, गाय, भैसों के टीलों पर, बैठे कौवे,
उनकी पीठ सहला रहे थे, हमेशा उफान में बहने वाली गंगा नदी,
बहुत ही स्थिर से आज बह रही थी, जैसे मानो सुसता रही हो,
वो चहकने वाली चिड़िया, अपनी दोनों फख फैलाए थकी-थकी सी उड़ रही थी,
दिन भर से बहती तेज हवाएं मानो जैसे बह कर बहुत दूर जा चुकी थी।
कुछ दूर पश्चिम की तरफ, झुक हुआ नदी के ठीक
किनारे वो पेड़, जैसे नदी को चूमने की प्रयास में झुक हुआ था,
मैं बहुत आसानी से देख रहा था उसके एक भी पत्ते नहीं हिल-डोल रहे थे,
पैर के पास उस चिपचिपी हुई रेत पर अपना और

उसका नाम लिख और मिटा रहा था,जो अब हकीकत में मेरी नहीं होने वाली थी,
यही मैं खुद को समझा रहा था।वो बेरुखी भरी शाम और मैं तन्हा उदास बैठ हुआ,
मुझे उदास देख, वो सूरज, वो नदी, वो चिड़िया, वो कौवे, वो बकुले, वो पेड़, वो रेत, वो खेत,
सब मेरे उदासी में शामिल हो गए थे।
क्योंकि यही तो मेरे सच्चे साथी थे, इन्ही से तो अपना दर्द कहता था
यही तो थे मुझे समझाने वाले, मेरे पीछे खेतों में
लगे हरे भरे मकई के खेत, खेतों के किनारे लंबे-लंबे, तने-बने ठने जौ और बाजरे के बीचों से चिरते हुए पगडंडी,मेरे घर को जा रही थी, मकई के जड़ों से लिपटे हुए हरे तरबूजों को तोड़,अपनी उदासी को नदी के किनारे छोड़, तरबूजों को चबाता हुआ, मुस्कुराते हुए घर को निकल गया।"

- अनीश कुमार देव

ग़ज़ल

करोगे क्या ये ऊंचे दाम लेकर।
नहीं कर पाए जो हरि नाम लेकर।

भरत ने त्याग दी प्यारी अयोध्या
वही प्रिय नाम जय श्री राम लेकर।

जो यश मां बाप दे देते हैं हमको
न मिल पायेगा चारो धाम लेकर।

न समझे प्रेम की भाषा कभी तुम
सुयोधन! क्या मिला सँग्राम लेकर।

गया जो पुंज भौतिक सुख के पीछे
वो लौटा ज़िन्दगी की शाम लेकर।

- प्रखर पुंज

हाय! विरह ये बिछड़न की

तुझको ही तो सब कुछ माना
सर्वस तुझी पर वारी पिया
तु कान्हा, तु शिवा ,तु ही तो मेरो श्री राम पिया
प्रेम की पीड़ा प्रेम ही जाने, प्रेम में ख़ुदी को हारी पिया
नयन निहारें, देखत रहिया, कतहूँ से आ जाए पिया
हाय! विरह ये बिछड़न की,
लेकर चली जाए न मेरो जान पिया
तु मेरो जो हो जाए, हर दर पे करूँ फ़रियाद पिया
मैं तोरी आँगन की तुलसी, तु मेरो जहाँन पिया
तुझको ही तो सब कुछ माना
सर्वस तुझी पर वारी पिया
तु कान्हा,तु शिवा, तु ही तो मेरो श्री राम पिया
मन की अभिलाषा में, बहते अश्रु की भाषा में,
दिल की हसरतें कह जाऊं पिया
प्रेम में नाहीं कवनो बंधन,
प्रेम पिंजरे से तोहे आज़ाद किया
तु मेरो जो प्रेम पंक्षी होवे,
पिंजरे में एक दिन लौट आयो पिया
ना चाहूँ तोहसे हिरे-मोती,
ना फूलों पे पांव पिया,
मोह पे चढ़ीयों प्रित रंग तोरे
अपने रंग में हमें रंग जायो पिया
संग-संग तोरे, हर पग पे चल पाऊँ
दे दियो तनिका प्रेम की छाँव पिया
प्रेम की पीड़ा प्रेम ही जाने, प्रेम में ख़ुदी को हारी पिया
मैं तोरी हो जाऊँ, हर दर पे करूँ फ़रियाद पिया
मैं तोरी आँगन की तुलसी, तु मेरो जहाँन पिया
हाय! विरह ये बिछड़न की, लेकर चली जाए न मेरो जान पिया।

- रानी कुमारी

प्रधान संपादक : अभिनंदन द्विवेदी | सहायक संपादक : अभिनंदन पाण्डेय, अलबेला, चित्रांश श्रीवास्तव, कुलदीप तिवारी | संपादक मंडल : विक्की, शुभम सोनी, अंकित शर्मा | संपादकीय कार्यालय : पिठौरी, बनियापुर, सारण – 841301, बिहार | अपनी रचना हमें भेजे : rachnakosh.editor@gmail.com